Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – II (विज्ञान वर्ग)

भाग – 1

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

1. मनोविज्ञान 1
   - सामान्य परिचय, परिभाषाएं, शाखाएं

2. बाल विकास 6
   - परिचय, परिभाषाएं
   - वृद्धि एवं विकास, सिद्धान्त एवं आयाम
   - प्रभावित करने वाले कारक
   - अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

3. विकास की अवस्थाएं 19

4. अधिगम एवं अभिप्रेरणा 50
   - परिचय, प्रक्रियाएं
   - प्रभावित करने वाले कारक इत्यादि
   - बालकों में चिंतन एवं अधिगम
   - अभिप्रेरणा एवं अधिगम

5. मानसिक स्वास्थ्य व समायोजन 85
   - परिचय, सकल्पना, प्रकार
   - समायोजन प्रतिमान इत्यादि

6. बुद्धि 96
   - परिभाषाएं, प्रकार, सिद्धान्त एवं मापन
   - बहु आयामी
   - संवेगात्मक बुद्धि इत्यादि

7. व्यक्तित्व 113
   - परिचय, प्रकार, प्रभावित करने वाले कारक
   - व्यक्तित्व मापन, साक्षात्कार
   - व्यक्तित्व विभिन्नता
   - प्रकार, पहचान, भाषा इत्यादि

8. शिक्षा का अधिकार 146
- परिचय
- विभिन्न धाराएं
- विद्यालय एवं मानक

9. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 154
10. क्रियात्मक अनुसंधान 161
11. मूल्यांकन 164
12. CCE सतत् मूल्यांकन 169

fodkl dh voLFkk;

- गर्भावस्था :- गर्भधारण से जन्म तक
- शैशवावस्था :- जन्म से 6 वर्ष तक
- बाल्यावस्था :- 7-12 वर्ष तक
- किशोरावस्था :- 13-18 वर्ष तक
- प्रौढ़ावस्था :- 18 के बाद

(टीन Ag - 13 - 19 वर्ष)

1. गर्भावस्था

गर्भावस्था कि अवधी - 280 दिनो कि होती है इसमे 10 चन्द्रमास होते हैं तथा साधारण शब्दो मे 9 महिने होते हैं।

- गर्भावस्था को 3 अवस्था ओ मे बाटा गया है।

① भ्रूणीक अवस्था / बीज अवस्था / डिम्बावस्था / रोपण अवस्था ⇒ (Germinal) or Ovum Period

काल - गर्भधारण से 2 सप्ताह

इस अवस्था मे शिशु अण्डे कि शक्ल का होता है तथा इसका आकार 'पिन के हेड' के बराबर होता है जिसे 'युग्मज' कहा जाता है।
यह अण्डा 10 दिनो तक गर्भाशय मे इधर-उधर तैरता रहता है।
10 दिनो तक इसे माँ के द्वारा कोई आहार नही मिलता है।
10 दिनो के पश्चात यह अण्डा गर्भाशय कि दिवार या परत

से जुड़ जाता है तथा इसे माँ के द्वारा आहार मिलने लगता है। इस क्रिया को 'रोपण क्रिया' के नाम से जाना जाता है।

- इस अवस्था में कोष्ठ विभाजन की क्रिया शुरू हो जाती है।

② भ्रूणीय अवस्था / पिण्डावस्था / Embryonic Period ⇒

काल - 2 सप्ताह से 2 माह तक

इस अवस्था में शरीर के सभी अंगो का निर्माण - कार्य शुरू हो जाता है। इस अवस्था के अन्त तक शिशु को आसानी से पहचाना जा सकता है।

- 2 माह के अन्त तक शिशु का भार लगभग 2g तथा लम्बाई 1-2 इंच हो जाती है।

③ भ्रूण / गर्भस्थ शिशु की अवस्था :- Fetal Stage

काल - 2 माह से जन्म तक

इस अवस्था में किसी भी नये अंग की उत्पति नहीं होती अपितु पूर्व निर्मित अंगो का पूर्ण विकास हो जाता है।

5 माह के अन्त तक शिशु के हृदय की धड़कन को सुना जा सकता है।

- 6 वे माह के अन्त तक शिशु के आन्तरिक अंग उसी प्रकार से कार्य करने लगते है जैसे व्यस्क के जन्म के समय वह शिशु अपरिपक्व कहलाता है जिसका वजन 2.5 kg से कम होता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* 2. शैशवावस्था *

श्रीमति हरलोक ने - जन्म से 2 सप्ताह को - शैशवावस्था नाम दिया है इस अवस्था के शिशु को नवजात शिशु कि संज्ञा भी दि जाती है।
इस अवस्था मे शिशु का लगभग 80% समय सोने मे निकलता है

श्रीमति हरलोक ने 2 सप्ताह से - 2 वर्ष के समय को बचपनावस्था नाम दिया है तथा 3-6 वर्ष को पूर्व-बाल्यावस्था नाम दिया है।

रॉस के अनुसार- जन्म से 2 वर्ष को - शैशवावस्था का नाम दिया है तथा 3-6 वर्ष को पूर्व - बाल्यावस्था का नाम दिया है।
जॉन्स - ने जन्म से 6 वर्ष को शैशवावस्था का नाम दिया है

शैशवावस्था को निम्न नामो से जाना जाता है।

(1) जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल (0-3 वर्ष)
(2) भावि-जीवन कि आधार-शीला (0-3 वर्ष)
(3) सीखने का आदर्श काल (0-3 वर्ष)
(4) संस्कारो के निर्माण कि आयू (0-3 वर्ष)
(5) सीखने कि आयू (0-3 वर्ष)
(6) पिय लगने वाली अवस्था (0-3 वर्ष)
(7) नाजुक अवस्था (0-3 वर्ष)
(8) खतरनाक अवस्था (0-3 वर्ष)
(9) अतार्किक चिन्तन कि अवस्था (3-6 वर्ष)
(10) पढने योग्य अवस्था (3-6 वर्ष)
(11) खिलोनो कि आयू (3-6 वर्ष)
(12) पूर्व प्राथमिक अवस्था (3-6 वर्ष)
(13) पूर्व विद्यालयी आयू / शाला पूर्व आयू (3-6 वर्ष)
(14) नर्सरी स्कुल ऐज (3-6 वर्ष)

(14) प्रारम्भिक विद्यालय कि पूर्व तैयारी कि अवस्था आदी। (3-6 वर्ष)

* शैशवावस्था के विकासात्मक कार्य व विशेषताए *

नोट - सर्वप्रथम विकासात्मक कार्य का सम्प्रत्यय (विचार) शिकागो यूनीवर्सीटी के प्रोफेसर "केविंग हर्स्ट" के द्वारा दिया गया।

- विकासात्मक कार्य से तात्पर्य बालक कि आयू व अवस्था के अनुसार कार्य करने से है।

(1) शारीरिक व मानसिक विकास तीव्र गति से
(2) जिज्ञासा प्रवृत्ति
(3) सिखने कि प्रक्रिया मे तीव्रता
(4) सीमित मात्रा मे कल्पना
(5) दूसरो पर निर्भर
(6) दूसरे शिशु ओ के प्रति रूचि
(7) दोहराने कि प्रवृत्ति
(8) अनुकरण द्वारा सिखना
(9) मन कि मौजी मे विचरण करना
(10) क्षणिक मित्रता
(11) मित्रो कि संख्या 1 या 2
(12) संवेगो का प्रदर्शन
(13) मूलप्रवृत्यात्मक व्यवहार
(14) नैतिक व सामाजिक भावना का अभाव
(15) न तो सामाजिक और न ही असामाजिक
(16) स्वार्थी व स्वः केन्द्रित
(17) अपनी संवेदना ओ (ज्ञानेन्द्रियो) व शारीरिक क्रिया ओ के माध्यम से सिखना
(18) कहानीयाँ सूनना व सूनाना
(19) दो वर्ष कि आयू तक मल-मूत्र विसर्जन के संकेत देना
(20) पाँच वर्ष कि आयू तक मल-मूत्र विसर्जन पर नियन्त्रण करना
(21) सूनना, बोलना, पढना, लिखना (LSRW) आदी भाषायी कौशलो कि आधारभूत समझ आदी।

नोट- परचुनेट पीरीयड :- जन्म से आधे घण्टे तक के समय को परचुनेट पीरीयड (अंशकालीन अवधि) कहा जाता है इस अवधि के अन्तर्गत गर्भ नाल को काटकर शिशु को माँ से अलग किया जाता है।

* शैशवावस्था से सम्बन्धित कथन *

1 सिगमण्ड फ्रायड के अनुसार :- जीवन के पहले पाँच वर्षों में बालक भावी-जीवन कि नीव रख लेता है।

2. वेलेन्टाइन के अनुसार :- शैशवावस्था सीखने का आदर्श काल है।

3. वाटसन के अनुसार :- शैशवावस्था मे सीखने कि सीमा और तीव्रता विकास कि और किसी अवस्था से बहुत अधिक होती है।

4. गुडएनफ के अनुसार :- व्यक्ति का जीतना भी मानसिक विकास होता है उसका आधा 3 वर्ष तक हो जाता है।

5. जॉन लॉक के अनुसार :- शिशु का मस्तिष्क "कोरी स्लेट" होता है जिसे तबुला रासा कहा जाता है।

* 3. बाल्यावस्था *

बाल्यावस्था को निम्न नामो से जाना जाता है।

1. निर्माणकारी काल
2. अनोखा काल
3. प्रारम्भिक विद्यालय कि आयु
4. शैक्षिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण काल
5. वैचारिक क्रिया अवस्था
6. Gang Age (टोली दल/समूह कि आयु)

7. मिथ्या / छद्म परिपक्वता का काल
8. प्रतिद्वन्द्वात्मक समाजीकरण का काल
9. ~~मूर्त~~ Game Age (खेल कि आयु)
10. मूर्त चिन्तन कि अवस्था / उत्पाती अवस्था
आदी।

महत्वपूर्ण काल / अवस्था - शैशवावस्था
शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अवस्था - बाल्यावस्था

* बाल्यावस्था के विकासात्मक कार्य व विशेषताए *

1. शारीरिक व मानसिक विकास मे स्थिरता
2. जिज्ञासा प्रवृत्ति मे प्रबलता
3. यथार्थवादी दृष्टिकोण (आज मे जिता है)
4. रचनात्मक प्रवृति का विकास
5. निर उद्देश्य भ्रमण करने कि प्रवृति
6. संग्रह करने कि प्रवृति
7. चोरी करना व झूठ बोलना
8. भाई बहिनो मे झगडा
9. प्रसन्सा पाने कि इच्छा
10. प्रतिस्पर्धा कि भावना
11. पक्षपात कि भावना
12. हिन-भावना का शिकार
13. बहीमुखी व्यक्तित्व का विकास (अन्तर्मुखी से बहीर्मुखी बनाना)
14. नकारने कि प्रवृति
15. जाति-भेद, अर्थ-भेद व लिंग भेद
16. समलिंगीय समूह भावना
17. नेता बनने कि इच्छा
18. संवेगो पर नियन्त्रण

(19) नैतिक व सामाजिक भावना का विकास
20. खोखली मित्रता
21. भाषा एव सम्प्रेषण योग्यता का विकास
22. खेलो मे रुचि
23. मूर्त चिन्तन कि योग्यता आदी

* बाल्यावस्था से सम्बन्धित कथन *

ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन के अनुसार :- बाल्यावस्था वह काल है जब व्यक्ति के बुनियादी दृष्टिकोण मूल्य तथा आदर्श एक बडी सीमा तक निरूपित किए जाते है।

II कथन - शैक्षिक दृष्टिकोण से जीवन चक्र मे बाल्यावस्था से महत्वपूर्ण और कोई अवस्था नही है।

रॉस के अनुसार - बाल्यावस्था मिथ्या-परिपक्वता का काल है

किलपैट्रिक के अनुसार - बाल्यावस्था प्रतिद्वन्दात्मक समाजिकरण का काल है।

कॉल एव ब्रूस - बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल है।

स्टैंग के अनुसार :- ऐसा सायद ही कोई खेल हो जिसे 10 वर्ष का बालक न खेलता हो।

* किशोरावस्था Adolescence *

उत्पति Latin word ⇒ Adolescere से हुई जिसका अर्थ होता है परिपक्वता कि ओर बढना

Toppersnotes
Unleash the topper in you

- सर्वप्रथम किशोरावस्था का क्रमबद्ध व वैज्ञानिक अध्ययन अमेरिका के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक "स्टेनली हॉल" के द्वारा किया गया। इन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Adolescence" के अन्तर्गत 1904 मे किशोरावस्था के एक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

* किशोरावस्था के सिद्धान्त *

① त्वरित विकास का सिद्धान्त ⇒ प्रवर्तक - स्टेनली हॉल
- इस सिद्धान्त के अनुसार किशोरावस्था मे विकास अकस्मात होता है

② क्रमिक विकास का सिद्धान्त ⇒ प्रवर्तक - थार्नडाइक व हॉलिंगवर्थ
- इस सिद्धान्त के अनुसार किशोरावस्था मे विकास क्रमानुसार अर्थात् धीरे-2 होता है।

किशोरावस्था को निम्न नामो से जाना जाता है।

1 जीवन का सबसे कठिन काल

2 आंधी तुफान कि अवस्था

3 तनाव संघर्ष कि अवस्था

4 समस्याओ कि आयू

5 उलझन कि अवस्था

6 झंझावत कि अवस्था

7 द्रुत एवं तीव्र विकास कि अवस्था

8. स्वर्ण काल

Toppersnotes
Unleash the topper in you

तीव्र गति से विकास होता है - किशोरावस्था
स्टेनले - शैशवा + किशोरा

9. बसन्त ऋतु
10. तार्किक चिन्तन कि अवस्था - अमूर्त + चिन्तन का विकास
11. परिवर्तन कि अवस्था
12. अवास्त विकता ओ कि आयु
13. संक्रमण एवं परिवर्ती अवस्था
14. अस्पष्ट व्यक्तिक स्थिति कि अवस्था ⇒ इस संदर्भ मे एरिक्सन का कहना है कि किशोर इस बात का स्पष्टीकरण चाहते है कि वह कौन है समाज मे उसकि क्या भुमिका है तथा वह बच्चा है अथवा वयस्क
15. विशिष्टता कि खोज का समय :- इसे 'एरिक्सन' ने अहम विशिष्टता कि समस्या कहा है।

16. प्रौढावस्था अथवा व्यस्कावस्था कि दहलीज आदी।

* किशोरावस्था के विकासात्मक कार्य व विशेषताएँ ⇒

→ बहुमुखी विकास अर्थात् शारीरिक मानसिक सामाजिक व संवेगात्मक विकास
→ बुद्धी का अधिकतम विकास
→ घनिष्ठगत एवं घनिष्ठ मित्रता
→ कल्पना का बाहुल्य
→ दिवा - स्वपन की प्रवृति
→ वीर पुजा / नायक पुजा कि प्रवृति
→ आत्मसम्मान को महत्व
→ पीढीयो मे अन्तर के कारण विचारो मे मत भेद
→ समायोजन का अभाव
→ मानसिक स्वतंत्रता एव विद्रोह कि स्थिति
→ स्वतंत्र सोच का विकास
→ ईश्वर तथा धर्म मे विश्वास / अविश्वास
→ समाज सेवा व देशभक्ति कि भावना
→ स्वतंत्र निर्णय क्षमता

→ विचारो व संवेगो मे परिपक्वता
→ संवेगात्मक परिवर्तन तीव्र गति से
→ रूचियो मे परिवर्तन
→ समवयस्क समुह भावना (Peer Group) लड़के या लड़कियो
→ नेतृत्व का विकास
→ स्व - पहचान
→ आत्म चेतना
→ आत्म - सम्प्रत्यय (अपने बारे मे विचार करना)
→ आत्म निर्भर बनने कि इच्छा
→ व्यवसायिक चुनाव कि चिन्ता
→ अमूर्त चिन्तन कि योग्यता (जो दुनिया मे नही को उसके बारे मे सोचना)
→ काम प्रवृत्ति

आत्म प्रेम | समलिंगीय प्रेम | विषम लिंगीय प्रेम

→ किशोरो कि वाणी मे कर्कशता व भारीपन
→ किशोरीयो कि वाणी मे कोमलता व मधुरता
→ माता - पिता से अधिक कम उम्र को महत्व देना
→ मिश्र संस्कृति अपनाना
→ आदर्शवाद बनाम यथार्थवाद
→ आत्मनिर्भरता बनाम निर्भरता
→ समस्यात्मक बालक
→ सौन्दर्य का उपासक
→ विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण
→ अध्ययन के प्रति गंभीर
→ जीवनसाथी के चुनाव कि समस्या
→ मादक पदार्थो का सेवन करने कि समस्या
→ वित्तीय समस्या अर्थात (धन कि समस्या)
→ आत्महत्या कि समस्या

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* किशोरावस्था से सम्बन्धित कथन ⇒

① स्टेनली हॉल के अनुसार -
किशोरावस्था प्रबल दबाव व तनाव, तुफान एवं संघर्ष का काल है।

" किशोरावस्था एक नया जन्म है क्योंकि इसी में उच्चतर व श्रेष्ठतर मानव विशेषताएं प्रकट होती है।"

" किशोरो में जो शारीरिक मानसिक व संवेगात्मक परिवर्तन होते है वे अकस्मात होते है।

② वैलेन्टाइन के अनुसार -
व्यक्तीगत एवं घनिष्ठ मित्रता किशोरावस्था कि विशेषता होती है।

" किशोरावस्था अपराध प्रवृति के विकास का नाजुक समय है।"

③ रॉस के अनुसार -
किशोर समाज सेवा के आदर्शों का निर्माण व पोषण करते है।

" शिशु के समान किशोरो को वातावरण के साथ समायोजन करने का कार्य पुनः आरम्भ करना होता है।"

Toppersnotes
Unleash the topper in you

④ किलपैट्रिक के अनुसार - किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन साल है।

⑤ जॉन्स के अनुसार - किशोरावस्था शैशवावस्था कि पुनरावृत्ति है।

⑥ कोलेस्निक के अनुसार - किशोर प्रौढो को अपने मार्ग में बाधा समझते है। जो उन्के स्वतन्त्रता का लक्ष्य प्राप्त करने से रोकते है।

* किशोरावस्था में आहार सम्बन्धी विकार (Eating Disorder)

① Anorexia Nervosa → Under Weight

→ इस रोग से पीड़ित व्यक्ती का वजन सामान्य से भी कम होता है। इसके बाद भी इस डर से कि कही वजन ना बढ जाये भूखा रहने लगता है। तथा अपने खाने कि मात्रा मे कठौती करने लगता है।

② Bulimia Nervosa → Normal Weight

→ इस रोग से पीड़ित व्यक्ती पहले तो अधिक खा लेता है। फिर उस खाने को उगल देता है। ऐसा व्यक्ती वजन पर नियंत्रण करने के लिए अनावश्यक व्यायाम करता है। दवाइयो का सेवन करता है। तथा उल्टीया करता है।

③ Binge Eating Disorder / Obesity - over Weight

→ इस रोग से पीड़ित व्यक्ती तब तक खाये जाता है। जब तक कि कोई समस्या उत्पन्न ना हो जाये ऐसा व्यक्ती अधिक खाने कि आदत पर नियंत्रण करने तथा वजन पर नियंत्रण करने मे असमर्थ होता है।

नोट - आहार सम्बन्धी बिकार लड़को कि अपेक्षा लड़कियो मे अधिक पाये जाते है।

* विकास के सिद्धान्त ⇒

① मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त - सिगमंड फ्रायड
② मनोलैंगिक विकास सिद्धान्त - सिगमंड फ्रायड
③ मनोसामाजिक विकास सिद्धान्त - एरिक्सन
④ पारिस्थिति परक सिद्धान्त - यूरी ब्रोनफेनब्रेनर
⑤ संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त - जीन पियाजे
⑥ संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त - वाइगोस्की
⑦ नैतिक विकास सिद्धान्त - लोरेन्स कॉहल्ल बर्ग
⑧ नैतिक विकास सिद्धान्त - जीन पियाजे
⑨ भाषा विकास सिद्धान्त - नॉम चॉमस्की

① मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त — (Psycho-Analytical Theory)

→ सिगमंड फ्रायड ने मन कि तीन दशाए बताई है।

① चेतन मन 1/10 भाग :-
मस्तिष्क से जाग्रत अवस्था

② अचेतन मन 9/10 भाग :-
कडु अनुभूतियो दुःखद बातो तथा दमित इच्छा ओ का भण्डार

③ अर्द्धचेतन मन :-
चेतन व अचेतन के बीच कि अवस्था "याद कि हुई बातो को अचानक भूल जाना, अटक जाना, हकला जाना आदि बाते अर्धचेतन मन को उपस्थित करती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

② सिगमण्ड फ्रायड ने व्यक्तित्व संरचना कि दृष्टि तीन अवस्थाएं बताई हैं।

① Id (इदं)
② Ego (अहम्)
③ Super Ego (परम अहम्)

① Id -
→ सुखवादी सिद्धान्त
→ इच्छाओं का भण्डार गृह
→ अचेतन मन से सम्बन्ध
→ अनैतिक व अपराध कार्य
→ पशु प्रवृति
→ कुसमायोजन के लिए जिम्मेदार

② Ego (अहम्)
→ वास्तविक सिद्धान्त
→ चेतन मन से सम्बन्ध
→ Id तथा Super Ego के बीच संतुलन का कार्य
→ समायोजन कि अवस्था
→ व्यक्तित्व का कार्यपालक

③ Super Ego (परम् अहम्)
→ आदर्शवादी सिद्धान्त
→ अध्यात्मिक कि ओर रुझान
→ नैतिक व आदर्श वादी बाते
→ आदर्शों कि अधिकता
→ कुसमायोजन के लिए जिम्मेदार

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(3) कुसमायोजन के लिए जिम्मेदार ?

(1) Id (2) Ego (3) Super Ego कि अधिकता

(4) आंकाक्षा कि कमी

(3) सिगमण्ड फ्रायड ने दो मूल प्रवृत्ति बतायी है। जीवन मूल-प्रवृत्ति

जीवन (जिजीविषा)	मृत्यु (मुमूर्षा)
Eros	Thanatos

(4) स्वमोह (नार्सिसिज्म) (शैशावस्था)

→ अपने आप मे मस्त रहने तथा अपने आप से प्रेम करने कि क्रिया को नार्सिसिज्म कहते है। यह प्रवृत्ति शैशावस्था मे सर्वाधिक पायी जाती है।

(5) ऑडिपस व एलेक्ट्रा ग्रन्थि -

सिगमण्ड फ्रायड के अनुसार लडको मे ऑडिपस ग्रन्थि होने के कारण वे अपनी माँ से अधिक प्रेम करते है तथा लडकियो मे एलेक्ट्रा ग्रन्थि होने के कारण वे अपने पिता से अधिक प्रेम करती है।

(6) लिबिडो - सिगमण्ड फ्रायड ने काम प्रवृत्ति को लिबिडो कहा है। उनके अनुसार यह एक स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है और यदि इस प्रवृत्ति का दमन करने कि कोशिस कि जाती है। तो व्यक्ती कुसमायोजित हो जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(7) शैशव - कामुकता -

शैशव - कामुकता के बात पर सिगमण्ड फ्रायड व उनके शिष्य युंग के बीच मतभेद व हो जाता है तथा मतभेद के उपरान्त युंग एक अलग सिद्धान्त का प्रतिपादन करते है जिसका नाम है विश्लेषणात्मक सिद्धान्त

(2) मनोलैंगिक विकास सिद्धान्त (Psycho - Sexual development theory)

प्रवर्तक - सिगमण्ड फ्रायड

→ सिगमण्ड फ्रायड के अनुसार बालक के विकास पर उसकी काम प्रवृत्ति का प्रभाव पड़ता है उनके अनुसार काम प्रवृत्ती बालक में जन्म से पायी जाती है तथा भिन्न - 2 अवस्थाओं में इसका स्वरूप भिन्न - भिन्न होता है इस आधार पर इस सिद्धान्त को 5 अवस्थाओं के द्वारा समझाया है।

(1) मुखीय अवस्था (oral - stage) - (0 से 1 वर्ष)

→ इस पहली अवस्था मे काम प्रवृत्ती मुख के भाग मे केन्द्रीत होती है।

(2) गुदीय अवस्था (Anal - stage) - (1 से 3 वर्ष)

→ इस अवस्था मे काम प्रवृत्ती गुदा भाग मे केन्द्रीत होती है इस अवस्था मे बालक जिद्दी आक्रमक व धारणात्मक हो जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

③ लैंगिक अवस्था (Phallic Stage) - (3 से 6 वर्ष)

→ इस अवस्था मे बालक का ध्यान जननांगो कि तरफ जाता है। इसी अवस्था मे ओडीपस व इलेक्ट्रा ग्रंथि का विकास होता है।

④ अदृश्य अवस्था / प्रसुप्ति अवस्था (Latency Stage) - (7 से 12 वर्ष)

→ इस अवस्था मे काम प्रवृति अदृश्य हो जाती है। यह शरीर के किसी भी भाग मे विद्यमान नही होती।

⑤ जननेन्द्रिय अवस्था (Genital Stage) - (12 के बाद)

→ इस अन्तिम अवस्था मे कामशक्ति का प्रयोग संतानोउत्पति हेतु किया जाता है।

③ मनोसामाजिक विकास सिद्धान्त (Psycho-Social development theory)

प्रवृतक - एरिक्सन - नव्य फ्रायडवादी माना जाता है। क्योकि

→ एरिक्सन सिगमण्ड फ्रायड के विचारो से काफी हद तक सहमत थे लेकिन एक बात पर सहमत नही थे।

→ एरिक्सन का मानना है कि बालक के विकास पर उसकी काम प्रवृति का नही बल्कि सामाजिक अनुभूतियो का प्रभाव पडता है।

→ एरिक्सन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Childhood and Society के अन्तर्गत कहा कि मनुष्य केवल जैविक प्राणी ही न होकर सामाजिक प्राणी भी होता है। एरिक्सन ने अपने सिद्धान्त को आठ अवस्थाओ के द्वारा समझाया है।